चलना है अपने घर अब यह नाटक तो पूरा होने को है
पवित्र आत्माओं के लिए स्वर्ग के फाटक खुलने को है
मोह मिटाकर विनाशी जग से नई दुनिया को याद करो
सतयुगी संसार पाना है तो सर्व विकारों से पुरे ही मरो
कर दो सब कुछ बाबा पर अर्पण खुद को ट्रष्टी बना लो
21 जन्मों के लिए शिव बाबा से अविनाशी वर्सा पा लो
सामने तुम्हारे आ जाए अगर कितनी भी कड़ी परीक्षा
भूलो नहीं कभी भी जो बाप ने हमें दी है रूहानी शिक्षा
याद और सेवा में डूबकर बनाकर रखो एक रस स्थिति
विजय सदा हमारी होगी चाहे कैसी भी हो

परिस्थिति

ॐ शांति